

130135 13 11 11 11 11

130135

कण्ठ्यालया ककानादि न्यासः॥ ॥ जलयात्रा अर्घ्यात्रा उक्तं
 द्वि आत्मपूजा॥ ॥ मालिनीयः ॥ ॥ पंचवर्तिदद्यात् ॥
 आवाहिकं आवाहयानि वर्तिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ मयूमासनाय यादूः
 की ॥ जेजयी की कलपूषवदकनाथाय ३ ॥ बलि ॥ जेननासनाय
 ३ ॥ धवनासा कवजं धूम्रं ॥ धो धं कदादीपदम्बकीदवी महाध्वीक
 प्रयालाय ३ यापू ॥ ॥ बलि ॥ जेपनासनाय ३ ॥ जेजयी सर्वः

बलि
 यागिनीया ३ यापू ॥ जेजय कवित् यागिनीनीयी ० जा कण्ठ्याया
 गजा मरुजा गरुजा सदाहजा सहजा यकवित् यागिनीनीयं
 वनी रुचनी प्रसवनी मरुचनी एकाकनी द्विकनी त्रिकनी सका
 दकनवाकनी त्रिजम्भसिनी नीय ॥ आवयं नाना वर्तिं गृह्ण २ मम
 सर्वसिद्धिं कर्षतु ३ रुद्र स्वाहा ॥ ॥ जेननासनाय ३ ॥ जेजयी
 प्रीतिद्विवा मरुध्वनी ३ यापू ॥ बलि ॥ जेजयी मूलासनाय ३ ॥ जेजयी

म॥ श्रीजलिलाननम॥ ४४ यं वा मृतस्ताननम॥ ॥ जेवदन
नम॥ श्रीजकननम॥ श्रीसिद्धननम॥ शुभशायवीरनम॥
श्रीपूषाननम॥ ॥ गियाजलि॥ जेजजो श्रीदुधीसहानक
ज्यालाययापू॥ ३॥ बलि॥ ॥ जेजकादीदुध्यादकययाला
ययापू॥ ३॥ बलि॥ ॥ आबलपूजा॥ जेजवां श्रीवीरुमावद
काययापू॥ बलि॥ आनय॥ जेजगंगीगूगुमागंगलशुभत

ययापू॥ बलि॥ नेजय॥ जेजयां श्रीपुमायांयामिनेयापू॥ बलि
॥ वायुय॥ जेजवां श्रीवृमावामरुययैयुयापू॥ बलि॥ श्रीगत॥
॥ ॥ दानपूजा॥ जेजलां श्रीलीलुमादुदयवदहकायस
नाधियतययापू॥ बलि॥ ॥ जेज श्रीवावीरुमाजूनयगकिह
कायतजाधियतययापू॥ बलि॥ ॥ जेजमां श्रीमूमायमाय
रुदुहकाययनाधियतययापू॥ बलि॥ ॥ जेजका श्रीदुध्याने

अथायखदहसायनाकसाधियतययापू॥बलि॥ॐॐवावीवूवू
वदलाययाहसायजलाधियतययापू॥बलि॥ॐॐमायीयू
यूवाययायधजहसाययवनाधियतययापू॥बलि॥ॐॐसा
ॐसीसूमाकवनायदधुहसायधनाधियतययापू॥बलि॥ॐॐ
हादीहूवूवूशीलानायपिपूलहसायरुताधियतययापू॥
बलि॥ॐॐवावीवूवूविप्लववकहसायनागधियतयया

पू॥बलि॥ॐॐवावीवूवूउवदलाययदहसायसर्गाधियतययापू
॥बलि॥पूर्वादिशीलावूनाक॥॥अथअद्वैत॥ॐॐजुजु
पूर्वयी०धिकावदुदककजयालरुववायसर्गाकिमहिताययापू
॥बलि॥ॐॐकसर्गददकवर्नआनययी०धिकावदियूनाकक
कजयालरुववायसर्गाकिमहिताययापू॥बलि॥ॐॐवद्वजुस
ववर्नयाम्ययी०धिकावअग्निवतालकजयालरुववायसर्गाकि

वाययं ह्रीं द्वाली ग कि स हि ता य या पू॥ वलि॥ जे अ उ ओ औ द वी का ट क
ता य री म ल रु न वा य यं चामू धु ग कि स हि ता य या पू॥ वलि॥ जे अ अ
मू ४ द वी का ट क ता य री दा व रु न वा य ल म हा ल स्त्री ग कि स हि ता य
या पू॥ वलि॥ पूर्वादि ह्रीं ना नार्क॥ ॥ अथ व र्चः पुरु॥ जे ह सूर्य म
धु ला य या पू॥ जे स श म म धु ला य या पू॥ जे व अग्नि म धु ला य या पू॥ जे
लं ग कि म धु ला य या पू॥ जे अ अत रु वी क म धु ला य या पू॥ वलि॥

॥ नमो भगवते ॥ जे जे जे पूजा जा कि नो पायू ॥ बलि ॥ जे जे
 नो नो नो ना कि नो पायू ॥ बलि ॥ जे जे लाली लाली लाली ना कि नो पायू ॥
 बलि ॥ जे जे कां कां कू कां का कि नो पायू ॥ बलि ॥ जे जे सां सां
 सूं सूं सा कि नो पायू ॥ बलि ॥ जे जे हां हां हूं हूं हा कि नो पा
 यू ॥ बलि ॥ ॥ मध्व ॥ जे जे जां जां हूं हूं जी संहान ॥ कण्ठ पा
 लाय पायू ॥ ॥ अध्वान वद वती लिख्य ॥ पूजा ॥ बलि ॥

मूल न पूजा ॥ जे जे कां कां कू कां जी कण्ठ पालाय संह कि संहिताय
 पायू ॥ विष्णु ॥ कां ह दया ॥ यत मः वड ॥ न पूजा ॥ बलि ॥ सा
 क्षाय ॥ बलि ॥ आवाक ॥ धन ॥ याति दण्ड मूजा ॥ विदूषय ॥
 ॥ कि कण्ठ पाल पूजा विधि ॥ ॥ धन दण्ड यात न पूजा बलि ॥
 ॥ धर्म ॥ गन्धर्व दीय विजाल कण्ठ पाल नटी द नो पायू ॥ बलि ॥ ॥ स
 मवा ॥ वक्रायणी ॥ ॥ धर्म ॥ गन्धर्व दीय धन द कण्ठ पाल नका

दधोयापू॥बलि॥ ॥वर्था॥ॐ ह्रीं नमो नदीयसुमनीदवीपू
ष्यदत्तकुरुयालाययापू॥बलि॥ ॥रुद्र॥ लिखा॥ॐ ह्रीं नमो नदीय
दीयसुमनामनीदवीमहानन्दकुरुयालाययापू॥बलि॥ॐ
॥मर्याकादिवा॥ॐ ह्रीं नमो नयनदीयगोपालकुरुयालकामकी
दधोयापू॥बलि॥ ॥वृ॥ कामालांवा॥ॐ ह्रीं नमो वसन्तदीयपु
रानन्दकुरुयालत्रविद्यादधोयापू॥बलि॥ ॐ ॥लिङ्गवा॥

ॐ ह्रीं नमो सुपुद्गीयचतुकाताथकुरुयालपुरुकीर्तिदधोयापू॥ब
लि॥ ॐ ॥गो॥ॐ ह्रीं नमो नमो नदीयनतिप्रियाकुरुयाल
कामकीदधोयापू॥बलि॥ ॥ॐ ॥निद्रवा॥ अरुहेनव अरुमाह
कामकुलपूजाबलि॥मध्या॥ॐ ह्रीं नमो नयनदीयगोपालकुरुया
लकामकीदधोयापू॥बलि॥ ॐ तिष्ठथ ॐ ममपुलपूजा॥ ॥अथ
द्वितीयमपुलपूजा॥यनतिप्रकायनी आदिअरुमाहकापूजा॥

ॐ श्रीगुरु नमो नदीय महाकाल कण्ठ्याल धम्मदि योयापू ॥ वलि ॥ ॥ ए
 काहे श्रीगुरु ॥ ॐ श्रीगुरु पूरु नदीय प्रतिधन कण्ठ्याल ॥ दयोया
 पू ॥ वलि ॥ ॥ जंगु ॥ ॐ श्रीगुरु एकयाददीय विक्रम कण्ठ्याल
 वातादयोयापू ॥ वलि ॥ ॥ लम ॥ ॐ श्रीगुरु सुरुदीय वरु
 नाथ कण्ठ्याल गुरुकी पुदि योयापू ॥ वलि ॥ ॥ तनरु ॥ ॐ श्री
 गुरु पूरु नदीय प्रतिधन कण्ठ्याल दलुना दयोयापू ॥ वलि ॥ ॥

न वलि ॥ ॐ श्रीगुरु नयनदीय लम्याल कण्ठ्याल कामकी दयोयापू
 ॥ वलि ॥ ॥ लम ॥ ॐ श्रीगुरु सुरुदीय वरु नाथ कण्ठ्याल गुरु
 यकी पुदि योयापू ॥ वलि ॥ ॥ सा ॥ ॐ श्रीगुरु लम वरुदी
 य विक्रम कण्ठ्याल नटी दयोयापू ॥ वलि ॥ ॥ ॐ श्रीगुरु तिद्धिनीयम
 गुलपूजा ॥ ॥ अथ हतीयम गुलपूजा ॥ ॐ श्रीगुरु उवकायली
 ॥ ॐ प्रयाग महाकण्ठ्याल अगिता नरेन वायवकायली दयोयापू ॥ वलि

॥ ॥ गिमत ॥ ॐ वा नानसी महा कृष्ण नमो महा रे नवाय माह ध्वनी दधो
यापू ॥ वलि ॥ ॥ मूल गुधि ॥ ॐ कोलाय नमो महा कृष्ण जगु रे नवाय को
मात्री दधो यापू ॥ वलि ॥ ॥ काम पिवा ॥ ॐ अयक्ति मही महा कृष्ण उ
मरु रे नवाय वा नाही दधो यापू ॥ वलि ॥ ॥ लदल ॥ ॐ चक्रि मरु
कृष्ण कयाल रे नवाय जे दाली दधो यापू ॥ वलि ॥ ॥ वैरग क्ष ॥ ॐ
एकाग्रक महा कृष्ण री घल रे नवाय चामू उ दधो यापू ॥ वलि ॥ ॥

काकि ॥ ॐ दवी काह महा कृष्ण संहार रे नवाय महा लक्ष्मी दधो यापू
॥ वलि ॥ ॥ इति रतीय मगुल पूजा ॥ तस्मात्सामानंद ॥ ॐ अजालंधनयी
भयजालंधनानन्द नाथ जालंधनीय नामा दधो यापू ॥ वलि ॥ ॥ पुन
जालि ॥ ॐ अयुर्गु निवियी भययुर्गु नन्द नाथ युर्गु नामा दधो यापू ॥ वलि
॥ ॥ गारवा ॥ ॐ अकामययी भयकामा नन्द नाथ कामध्वनीय नामा द
धो यापू ॥ वलि ॥ ॥ वृका ॥ ॐ अज्ञानयी भयअजीघ्नानन्द नाथ

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ वलि ॥ ॥ यमुपति करुणाल ॥ ॐ नमः
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ वलि ॥ ॥ शुक्रेश्वरी ॥ ॐ नमः
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ वलि ॥ ॥ चतुष्पदि
लिङ्ग ॥ ॐ कांकां सः चतुष्पदि निवर्तिन ग्यानमः
॥ वलि ॥ ॥ तत्सर्व यमुपति ॥ ॐ कांकां सः कांकां सः श्रीगणेशाय नमः
थयापू ॥ वलि ॥ ॥ कृष्णरत्न ॥ ॐ कांकां सः रेव वायवापू ॥ वलि ॥

॥ वरुणादवी ॥ ॐ सिद्धिलक्ष्मीदयै वलि ॥ ॥ जयमङ्गला ॥ ॐ
॥ मङ्गलादवी ॥ ॐ दीपचतुर्थाथ करुणायै वलि ॥ वलि
॥ ॥ जयवागेश्वरी ॥ सिद्धिलक्ष्मीयामङ्गलापूजा वलि ॥ ॥
कलुषघ्न ॥ ॐ कांकां सः निवायनमः ॥ वलि ॥ ॥ वज्रयानिनी
॥ ॐ कांकां सः रुद्र श्री उग्रतानादयै वलि ॥ ॥ विष्णुविम्ब ॥
ॐ कांकां सः स्वयम्भुवै विम्बायवापू ॥ वलि ॥ ॥ महाकाल ॥ ॐ नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वलि ॥ ॥ वसुधा श ॥ ॐ श्री ८
नमो नमो ॥ राय नमो विष्णु नमो नमो ॥ वलि ॥ ॥ एता श
॥ ॐ नमो ॥ वेद नमो ॥ वलि ॥ ॐ नमो ॥ वासु नमो ॥ वलि ॥ ॥
कटि ॥ रे नमो ॥ ॐ नमो ॥ रे नमो ॥ वायु ॥ वलि ॥ ॥ ताट नमो
कुं नमो ॥ वलि ॥ ॥ खाप या र नमो ॥ ॥ अष्टा नमो ॥ वलि ॥
॥ नमो ॥ वासु नमो ॥ वलि ॥ ॥ रात या र नमो ॥ ॐ नमो
किल नमो ॥ अष्टा नमो ॥ वलि ॥

वां वी वृ नमो ॥ वलि ॥ ॥ वृ नमो ॥ सूर्य या र नमो
॥ वलि ॥ ॥ अष्टा नमो ॥ वां वी वृ नमो ॥ रे नमो ॥ वायु
॥ वलि ॥ ॐ नमो ॥ कुं नमो ॥ वलि ॥ ॥
॥ ॐ नमो ॥ वां वी वृ नमो ॥ वलि ॥ ॥
ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ कुं नमो ॥ वां वी वृ नमो ॥ वलि ॥
ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ कुं नमो ॥ वां वी वृ नमो ॥ वलि ॥

नल॥ जे० गंगी गू० गंगे लक्ष्म्याय यापू॥ वलि॥ ॥ कर्दम॥ जे० न
 थं दधनं तव गर्भे ॥ श्रीं श्रीं वानाही विश्व यापू॥ वलि॥ जे० चाँची वृं
 मां चामुण्डा वि० ॥ ॥ वलि॥ ॥ लूति॥ जे० यरुं वरुं म
 ॥ यवर्गन ॥ श्रीं श्रीं लू० लाणी विश्व यापू॥ वलि॥ ॥ थूसाक
 थिरुव॥ ॥ श्रीं श्रीं मरु० लयापूजा वलि॥ ॥ ॥ यिकलया ॥
 नाय॥ जे० ॥ गंगी गू० गंगे लक्ष्म्याय यापू॥ वलि॥ ॥ याक

नायक व॥ गंगे लया मरु० लयापूजा वलि॥ ॥ साक्षा॥ जे० चाँची वृं
 मां चामुण्डा ये यापू॥ वलि॥ ॥ ॥ साक्षि॥ ॥ मरु० लयापूजा वलि॥ ॥
 ॥ जे० कसाह वरीय यापू॥ वलि॥ ॥ ॥ दगातिलख ॥
 जे० यरुं वरुं यवर्गन ॥ श्रीं श्रीं चामुण्डा विश्व यापू॥ वलि॥ ॥
 वरुं वरुं ॥ जे० मरु० लयापूजा वलि॥ ॥ ॥ श्रीं श्रीं मरु० लयापूजा वलि॥ ॥
 ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ श्रीं श्रीं मरु० लयापूजा वलि॥ ॥



A.36

ॐ श्रीं कौं वज्र वेला च ती य दूं दूं रुट् स्वाहा ॥ विधा ॥ ४

पूजावलि॥ ॥ महाकालहोत्रव॥ महाकालयामस्तुतपूजावलि॥

॥ मया हूँ नाथ ॥ गलन्यामलुलपूजावलि ॥ ॥ यज्ञायव ॥

श्रीक्रीरुद्र नीलसुवस्त्रोपाय ॥ वलि ॥ ॥ यउकारगवती ॥ कि

नमस्कायामस्तुल्यपूजावलि ॥ ॥ शुभं वा ददी ॥ वामस्तुल्यपूजावलि ॥

॥ दृष्टं ज्ञानं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ वलि ॥ जंजु ॥ श्री कलचक्रवर्ती दयौ ॥ पादू ॥ वलि ॥ ॥

ॐ ज्ञा ज्ञा स्वस्त्यस्तु नवायमायू ॥ वलि ॥ ॥ तडावहीमस्तन

॥ उं जं श्री क्ली सी मा य स्वा हा श्री सी म रूं न वा य या पू ॥ वलि ॥

कतांश ॥ ॥ तस्यूनांश ॥ ॥ हतं धन ॥ ॥ उंज कांकी हं कयया

लाययावृ॥वलि॥ ॥सकाळूनाय॥ ॥(ग)ठळूनाय॥ ॥

शोकं वृ॥ जे० तांतीयं तासु कथया लाय बाधू॥ वलि॥ कथया लया

मकुल पूजा वसि ॥ ॥ कस्तुराय श्री कस्तुराय ॥ ॥ सिद्ध

ल॥ ॐ हं सः स्वयमुक्ते विस्वाययापू॥ वलि॥ ॥ सीवपू ॐ नाय
 ॥ ॥ मधूयवा नाटध्वन॥ ॥ आयमदनां ह॥ ॥ आयमदना
 टध्वन॥ ॥ अमरुल॥ ॐ ज वां ची वूं चूं वामुमुदयो यापू॥ वलि
 ॥ लवूरुल॥ वामुमु मकुल पूजा ॐ वलि॥ ॐ ज कां कां हूं चूं कां
 मानीदयो यापू॥ वलि॥ ॐ ज वां ची वूं चूं वधुधनीदयो यापू ॐ
 वलि॥ ॐ ज धूं उग्रवधुधनीदयो यापू॥ ॐ वलि॥ ॥ जनवाहाधव

॥ ॐ जां जां सः श्रीसूर्याय यापू॥ वलि॥ ॥ अगलनां ह॥ ॥ अः
 जालेनवा अघानल निखा मकुल पूजा वलि॥ ॥ कान्तिपूर॥
 ॐ जां रुवा नील कन्या र्या यापू॥ वलि॥ ॥ मानादव॥ ॐ विविध
 दवा ॥ महीध्वन॥ ॥ मखं ॐ नाय॥ ॥ ल ॐ नाय॥ अग्नि
 मथा ॐ जां उर्ध्ववः साहा॥ वलि॥ ॥ गलदिमो॥ कण्ठ्या मकुल
 पूजा वलि॥ ॥ ॥ दगुल॥ ॥ कङ्कसिक नाटध्वन॥ ॥ नखा
 रुतवेन कण्ठ्या मकुल पूजा वलि॥ काठ मकुल मगलान नलान

मकुल मकुल वलि॥ १

याहनूमान् ॥ ॥ वैश्वविम्बमखी ॥ ॐ कौं वैश्वविम्बाय पापू ॥ वलि ॥
॥ लाकं ध्वनमखी ॥ ॐ कौं लाकं ध्वनाय पापू ॥ वलि ॥ ॐ आं कूँ वज्र
वेलावनी कूँ रुट् ॥ वलि ॥ ॥ मखी कलं कं ध्वन ॥ ॐ अं कूँ सिद्धिमा
न (मं ध्वनाय पापू) सिद्धिमान (मं ध्वनी सहिनाय पापू ॥ वलि ॥
॥ काटिलि ॥ ॥ ॥ लाहाहा ॥ स्वकुन्दमकुल ॥ पूजाव
लि ॥ ॥ सि ॥ धाका कथानल ॥ ॐ कौं कौं कूँ स्वस्वान्तकं ययाला

ययापू ॥ वलि ॥ ॥ अं अतिन्दव ॥ ॐ कौं जलासाय पापू ॥ वलि ॥ ॐ
वां वनलाय पापू ॥ वलि ॥ ॥ अं कयकली ॥ ॐ अं अकयकलीया पा
पू ॥ वलि ॥ ॥ धनदाकव ॥ ॐ अं धनदाय पापू ॥ वलि ॥ ॥ रु
तरुतिनी ॥ ॐ अं रुतरुतिनीया पापू ॥ वलि ॥ ॥ नवग्रह ॥ ॐ अं
दित्यादि नवग्रहया पापू ॥ वलि ॥ ॥ गृहलक्ष्मी ॥ ॐ अं गृहलक्ष्मीः
या पापू ॥ वलि ॥ ॥ मूलचूकया वलि लाहा ॥ ॐ अं कौं कौं कूँ कूँ कूँ

कालायाय स्वर्गकिं सहिताय वापू ॥ वलि ॥ ॥ अ ॥ उग्रवज्रायाम
 कुंदा पूजा वलि ॥ ॥ तल श्या वलि लाहा ॥ पूजा वलि ॥ ॥ विष्णु
 लया पूजा वलि ॥ ॥ जिमति एत उदडा ॥ पूजा वलि ॥ ॥ य ए
 उदडा ॥ ग (ए) ग सूर्य नायाय सदा निव थव २ सकुंदा पूजा व
 लि ॥ ॥ दूवत माह का ॥ ग (ए) ग दिमाह का बद्क कृष्ण श्री
 गिनी पूजा वलि ॥ ॥ दूवत ॥ ए कानादिन उकार त्वं प्रियाः

जलि ३ पूजा वलि ॥ ॥ निर्वाण काय ॥ ॥ कृष्ण वलि पदाने ॥ ॥
 वेज कांकी कृष्ण कूल कृष्णया लाय श्री नमः ॥ हूँ हूँ हूँ हूँ ॥ वेज की प्रीति
 नमः ॥ कृष्ण कूल कृष्णया लाय श्री नमः ॥ सहिताय ए कृहि सर्व सम
 य लारु व कां कृन् २ सर्व सिद्धि दहि २ प्रीति का कृन् २ अ वतन २
 कुंज २ मन् २ कां कृ ४ अ माद्य वनय हूँ हूँ कां कां की कृन् ४ की हूँ हूँ
 हा ॥ ॥ अथ वलि माला ॥ सर्वयी (अथयी) भति दानाय दानमवच।

कथायकसंदाहा सर्वदिग्गमसंहिता ॥ निवर्तकप्रसादन श्रीक
ङ्किकोतमाम्नाह ॥ ॐ अङ्गोङ्गोङ्गो महाभाक्तिकर २ हूँ हूँ हूँ स्वाहा ॥ ॐ अ
कांकोङ्गोङ्गो श्रीअङ्गवादिउतयंवाण कथयामलयावलिगुह २
स्वाहा ॥ ॐ अङ्गोङ्गो अमृताय अमृतव २ कथयामल कपिलज
गतावरा मुनयिनवकालामुखगंधपूष्यवलिपूजागुह २ रे
नवपलउरु २ मरु २ ख २ लङ्क २ महाजामनाधियतयवलिगुह

२ स्वाहा ॥ ॥ अङ्गोङ्गो अमृताय अमृतवलिगुह २ सर्वभाक्ति
कर २ सर्वविघ्नविनाश सर्वभागप्रसाक्तिकर २ हूँ हूँ हूँ स्वाहा ॥
॥ वतीनिमकुलद्वारिणीयागिनीयावलिगुह २ स्वाहा ॥ ॥
वतीनिमकुलवतीणीयागिनीयावलिगुह २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ अङ्गो
कथं तं यं यं वक्तायामि अमृतमालकं यावलिगुह २ स्वाहा ॥
॥ ॐ अङ्गोङ्गो १ ३ अगिताक्षदि अमृतं नवयावलिगुह २ स्वाहा

॥ ॐ अं आं १३ कं ३४ हं लुकादिदलै नवस्थावर्तिगृह २२
हा ॥ ॐ अं आं पूकां ३५ डियातादि बहुष्यी ०५ आवर्तिगृह

२ स्वाहा ॥ ॥ जेजनाला कासा हा जाकि त्यादि घडा किनीखा
वर्लिगृक्त २ स्वाहा ॥ ॥ जेजया कासाना लावा जया दिखा वर्लिगृ
क्त २ स्वाहा ॥ ॥ जेजलूतू मूकू वूयू लूकू जूडू गू द्यादि दगला क
या लखा वर्लिगृक्त २ स्वाहा ॥ ॥ महाबलि ॥ नृपूद विप्रथमतः

जीवस्मात्कृतामया। नागलाकपूत्रनभश्चक्रिहानरुयावह॥ न
येधातिष्ठतविद्याश्रमाद्यावनदर्थिता॥ तांगृतामहादविमंमानरु
यनाहिनी॥ हूं गंदव्यामहादवीवीशुमानागृहहिता॥ कृतावलीति
विख्यातासर्वसिद्धिपतायका॥ जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं
४ हूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं
५ हूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं जीहूं

धी० जयन्त्या यद्वा० लमक्ष्यधी० विषयगतिरुताद विमंगलः
काला॥ आवा० सिद्धिर्धनं विरुतचक्रुष्यद्विधिरिगिरुतयू
काहं यं चखायं उन्नतकसहसादवदवीत्तमामि॥ ॥ त्वाक

महावलिनधूनक॥ ॥ धूप दीप तैल अरुलवकापी ता
मूलादिन सत्वमकुंल समर्थर्षी॥ ॥ जाय मालका॥ धा०

कयपालया॥ धन० ॥ ॥ त्वास॥ जयमाला नयाय॥ ॥
आवाक धनयाति तर्जनी मूला॥ हर्षर्षी॥ ॥ २

ॐ जां जां ह्रीं स्वाहा॥ १०८ ॥ श्रीं स्वाहा॥ १०८ ॥ निर्वाली॥ ५४ ॥ ॥
जयममर्थर्षी॥ विन्दुपुत्र २॥ ॥ मकुलवाय॥ ॥ स्वाय
॥ श्रीमन्मर्का ॥ ज्ञेयाशागकि ॥ मन्तार्तमन्मालेनव॥ नमास्तु
ममाहासाय॥ वन्दयदा॥ विष्णुकी॥ त्रकावर्त॥ रूकाज्ञानी
॥ हन्ता॥ दिवाकनसूतप्रीमान निर्यं उन्मुखेवर्ती॥ ॥
कयपालयास्वाय॥ निर्वालीनिर्विल्यं निरूपमम खिलनिर्विकान

ककारं दंकारं वङ्कारं कृत्वा वदत यतं वोदुः सल्लगावोरुक्ता
नं वङ्गागं युक्कटिकटिलकं रं नवं धूलया लिखद्वागं यामकं
उमन्कसहितं कृत्वा लन्तमासि ॥ यथावा ॥ वाक् ॥ यज
मानया नामकास्य धूतक ॥ कसाकृति ॥ पीतव्युता ॥
तुकातक ॥ यत्तु पृष्ठं धूतकाडा दशवलि विस्मृतयाय
सादिथाय ॥ दवालयद्वयकाडा धानलखसुताय ॥ ॐ ति

दशवलिपूजाविधिसमाप्त ॥ ॥ ॥

३ सप्तमं तु ० १ आवाक कृत्वा उकादनी वृद्धवान् उतदिना लिखि
त सप्तपूरु ॥ ॥ नुरुमम् ॥ ॥

२ सप्तमं तु ० १ आखाठक कृत्वा वरुद्धनी कृद्वा श्री ३ तलश्यागश
लिचास गृहशकदिन ॥

पूजाया वाक् ॥ यजमानस्य स्वेष्ट दवतायाः प्रासादस्य पुवर्तुक
ललापविगृहप्रवर्तनानां कथयिष्यामि पूजानितिसिद्धि
न ॥ ॥

यजमानस्य धर्मशालायाः वर्धवर्धनयतिश्रद्धाया बहूतदयः
यनपूजातिशिरस्यर्थेन ॥

श्रीउवाक्षः ॥ राजपतिक त्यादात शलसा श्रीमत्येवमी देवपूजाया
 थ कत्या इत माल ॥ ॥ वाक् ॥ यजमानस्य वावहा वसांगताहि
 शर्थ श्रीः ॥ दवगाये सुवर्षु याति पृथ्या नाहन यथा पचा न पूजा
 निमित्ताथेति ॥ ॥ इवने वलिधो ॥ अर्घ्याय नमः ॥
 एतादिन वद्वलिवाय ॥ ॥ यजमानत नपूष्य राजनयात
 क अशादिमात नक ववाक् नतह ॥ ॥ शितवता वम्य ॥ य
 द्रुजादिन वरु अकृत यशायवीत कर्षुपताक पंचयताक अ

इवात्र स्नानखलं ॥ ॥ शितलं तावम् ॥ अग्रादिमासक
मार्तुपूजा ॥ पुनर्मखादि ॥ त्मास ॥ ॥ जलपात्र अर्घ्यपात्र ॥
रुतपुष्टिआत्मपूजा ॥ ॥ मालिनीयं वलिवियं ॥ सत्जनः
पूजा ॥ माहनीरुथं ॥ ॥ आसनं ध्यानं ध्यानप्रतिष्ठा जीवन्मा
स पात्र आसन स्नानतिदूत स्नानखलं ॥ ॥ श्रीसत्कर्तुः
आवाहनं विद्वत्प्राप्तिनी वलि आवाहनं मूढा ॥ तर्क्यं ॥ ॥
पश्चिमं दक्षिणं लिखाद्यर्थं ॥ धर्मं लिखितं कर्मरुका ॥

साक्षात् निर्वाणं लोकमहावालि ॥ आवाहनं मूढा ॥ ॥ धूपं दा
यते वयं ॥ ॥ जापकाय ॥ यथावालि ॥ वाक्कतसह ॥ ॥ यः
जमानादिताय विद्यं ॥ रुमापुति ॥ ॥ श्रीतश्चता ॥ एकानक
॥ ॥ विजानं विमूलसपूजायातुतानं ॥ वाक्कतसहवरु
स्नानखलं ॥ ॥ शितलं तावम् ॥ वलियात ॥ अर्घ्यपात्र तस्य
पुनर्मखादि त्मास ॥ जलपात्र अर्घ्यपात्र रुतपुष्टिआत्मः

पूजा॥ ॥मालितिर्यववलि विथ॥ ॥पीसम्वलतिआवाहन॥
 जिदवयानिनी वलिआवाशमडा॥धर्तलितिलेकर्मशुका॥
 साक्षाय॥निर्वालि लाकमहावलि॥आवाशमडा॥ ॥पूर्वम्भ
 खरुनुरेवमकुलविधा॥ ॥उरुवम्भखविगूल॥ ॥धू
 वदीपतवय॥जायका॥ ॥पीपूलाहितलसायाउइका
 य॥पीपूलावाक्कीशकाइवत॥लवतयेनीखइता॥ ॥

++++

विगूलसूचिपूजायाय॥यमुतव्यल॥पूर्वउरुवम्भखसहि
 ष्ठाथ॥वृकतकाय॥ ॥स्नानकाकाय वलिविसर्जनसाः
 किथाय॥ ॥इवतवृकतव्यलयायसमययाय॥ ॥
 दवकवृकस्नानखल यजमानादि वृकस्नानविथ॥ वलि
 विसर्जनसाकिथायमासलिकाय॥पीकूलवृकवनीपू
 जाविधि॥

१ अथवा राह ॥ अथ ॥ ७ पूमं नगोत्राणां अमुकनामधेयाणां मनसा वाचा कर्म
 ण वाचा अवाचा मन्त्रा अमन्त्रा शा ता शा त्र गं म्या गं म्य अगं म्या गं म्य
 कृत सर्व पाप क्षयार्थं चतुर्वर्ग फल प्राप्ति काम नया नव ग्रहा दि
 जं न्य दोष शांत्यर्थं सु फल प्राप्तिार्थं यो गिं न्या दि ज न्य दोष शांत्यर्थं सु
 फल प्राप्तिार्थं अकाल मृत्यु महा मारी विस्फोट का दि भय निवार
 णार्थं तथा च कोटि गौ दान वा जपे या दि अश्व मेध जज्ञ जं न्य फ
 ल प्राप्ति कामां कार्तिक मास पर्यंतं अमुक देवा स्थाने खो ड शा क्ष
 र मूल मं मे ण जै पं लक्ष जप वर्य करि रखा मि इति संकल्पः ॥ १ ॥

विना लिखितो कायानु

सम्पत् १५०२ साल मी ति आषाढ सु दि १३ सव हस्य ति वार थ पुन को थु पी
 हसखा पालं पुया सि ब लि ध्या र्व वि ज्ञा त स्व र्था मु ग ल य लु ध्वा का कु य
 माल वलै लि त वो स लु ध्वा का कु य माल लु ध्वा का स ल स व स या
 य माल ल स या य ना व ना स चो क या द वु लि स हि ध्या र्व वा ध्या र्व
 दु य के हि धो स वा यो स का य माल ना य क आ वा र्थ न ल स व स या
 य हि धो स वा नौ स स पू जा या य माल ॥ वलै स लि त्रि मु ल द वु लि स
 दु य के माल ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥

त्रिशूलद्वलित रुयके वेलसः सिद्धाकास लससया यधून
काव तावाज्ञोनकावलसधारा हायेका वद्वलिततय ॥ १ ॥
ह्रियोस आयोसलस नायक श्रायार्थन पूजाया यमाल ॥
ध्वनीलि मरुद्वलित स्याखन रुयके माल ॥ ध्वनीलि वंगलडुलि
सप्याखन रुयके माल ॥ ध्वनीलिल गमडुली सप्याखन रुयके
माल नायक श्रायार्थन पूजाया यमुमाल ॥ ध्वनीलि वेलाखत दि
गुतलेया हेवने माली कपाली वने दवुली सप्याखन रुयके माल ॥

श्री १ कायव ॥

पलखालयाधा कायाल हेवने लसखसया यमाल नायक श्रायार्थ
नलखधारा हा कावद्वली सविज्ञात के ह्रियोस आयोसक पूजाया
यमाल ॥ बहुधी पूजा मया कुखोना मितस्य यात ॥ छातथथे ॥
गथप्याखन नयना वगुत पूहियात ननार्त धून काववी ज्ञात ॥
श्रावत श्रदि ७ आदि वारुनु वेद काया वखौ वा विज्ञात ॥ शुभ ॥
पुगुदस नायक श्रायार्थ ॥ शुभ ॥

८	९	६
३	५	७
४	२	२



अथ कालीध्यान ॥ ॥ अतिगुणमहाकालि दणवकुलश्लाघना ॥
 कृष्णवर्णमिहागजा अस्त्रवाहूतनूदरी ॥ नानावर्णमूर्खदयासूः
 अतिवाहकं स्मरे ॥ वायुचर्मयनीध्वनी हाता हतलह विना ॥ वि
 मूर्खकृष्णवर्णव. मङ्गलायुधदक्षिणे ॥ घातापायं च खट्वीं गी मृग
 वानकनैतथ ॥ विभूतिकुमरा अङ्गी सहस्रवित्तनिहा ॥ अस्त्र
 शकस्य मध्वक्ता अतिव्यापाचकं बला ॥ निर्वीर्यददायी चर
 वातीतामना एवा ॥ ध्यानपूर्वकं नमः ॥ ॥ ॥

ASMA ARCHIVES

1.364



गुरु दत्ता दशम्या नि (१) म न दृष्टि क मंगलान् म हवि त वि सिद्धि मं